बाइबल टीचर

वर्ष 19 फरवरी 2022 अंक 3

सम्पादकीय

प्रभु का दिन-आपस में इक्ट्ठा होना न छोड़ें

बाइबल में हम पढ़ते हैं कि सप्ताह के पहिले दिन चेले रोटी तोड़ने या प्रभु भोज लेने के लिये एकत्रित होते थे। (प्रेरितों 20:7)। इब्रानियों का लेखक कहता है, ''और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो।'' (इब्रानियों 10:25)। आज प्रत्येक मसीही को बड़ी गंभीरता से यह सोचना चाहिए कि आपस में इक्ट्ठा होना कितना महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने अपने वचन में ऐसी बात इसलिये लिखवाई क्योंकि वह जानता है कि हम मनुष्य कितनी बार आज्ञा मानने से दूर चले जाते हैं। छोटी-छोटी बातों का बहाना बनाकर हम अराधना में नहीं आते, और अभी लगभग दो वर्षो से यानि कोरोना काल में लोग ऑनलाइन आराधना के इतनी आदि हो गये हैं कि उन्हें अराधना में आना अब अच्छा नहीं लगता, क्योंकि वे सोचते हैं कि जब घर में अपने सोफे पर बैठकर मोबाइल से सब कुछ आराम से हो जाता है तो इतनी दूर अराधना भवन में जाने की क्या आवश्यकता है? यदि आप या मसीही लोग इब्रानियों 10:22-25 को ध्यान से पढ़ें तो आपको पता चलेगा कि प्रभु की यह बात कितनी महत्वपूर्ण है। जब आपने सुसमाचार की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया था तब आपका रिश्ता यीशु मसीह के साथ पक्का हो गया था। क्योंकि आपने अपना जीवन उसे पूर्णरूप से समर्पित कर दिया था। वह कहता है, ''और इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है। और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिंता किया करें।''(पद 21-24)। इब्रानियों का लेखक पुराने नियम से बातों को लेकर बता रहा है कि परमेश्वर के निकट रहना कितना आवश्यक है। जब हम आपस में सहभागिता

छोड़ देते हैं तब हमारी परमेश्वर से दूरी होने लगती है। परमेश्वर ने कलीसिया को इसीलिये बनाया था ताकि सारी मण्डली एक साथ मिलकर अराधना करे। परन्तु अब सब स्थानों में ऐसा दिखाई दे रहा है कि लोग परमेश्वर से दूर होते जा रहे हैं। यहूदी लोग परमेश्वर का बहुत भय मानते थे और जानते थे कि उसके हाथों में पड़ना कितनी भयानक बात है। (इब्रा. 10:31)। जो लोग अराधना को बड़े हल्के-फुल्के ढंग से लेते हैं उन्हें यह बात समझनी चाहिए कि उसकी आज्ञा को तोड़ना कितना भयानक है। कई मसीही लोग छोटी-छोटी बातों का बहाना बनाकर अराधना में नहीं आते और यह बड़े दुख की बात है। आप जब भी अराधना में नहीं आते तब आपको यह जानना चाहिए कि आप दूसरे मसीहीयों के लिये एक गलत उदाहरण रख रहे हैं। आपके सामने कई ऐसी परिस्थितियां भी आ सकती हैं कि आप अराधना में न आ सके, जैसे कि बीमारी या आपका स्वास्थ्य, आपको कहीं अनिवार्य रूप से जाना है या कोई और विशेष कारण परन्तु कुछ बातें ऐसी भी होती है जिन्हें आप टाल सकते हैं, परन्तु आप किस बात को अधिक महत्व देते हैं यह आप पर निर्भर करता है। हमेशा याद रखिये मत्ती 6:33 जहां लिखा है कि सबसे पहिले हमें परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करनी है।

जब आप अराधना में नहीं आते तब आप यह दिखाते हैं कि मुझे दूसरे मसीही भाई-बहनों से कोई लेना देना नहीं, परन्तु परमेश्वर चाहता है कि आप मसीही भाईयों को उकसायें तथा उनका साहस बढ़ायें। परन्तु बात यह है कि कई मसीही अपने जीवनों से यह दिखाते हैं कि उनकी दृष्टि में कलीसिया का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपको जानना चाहिए कि यहोशु ने कहा था कि ''जहां तक मैं और मेरा परिवार है हम हमेशा परमेश्वर की सेवा करेंगे।'' (यहोशु 24:15)। क्या आपका विश्वास यहोशु जैसा है?

कलीसिया एक ऐसा संगठन है कि हमें एक दूसरे की आवश्यकता है। कई बार हम दूसरों के उपर उंगली उठाते हैं कि वो भाई या बहन अराधना में नहीं आ रहे हैं, परन्तु क्या हम अपने बारे में देखते हैं कि मैं या हम क्यों अराधना में नहीं जा रहे हैं आख़िर कारण क्या है? क्या लॉकडाउन के कारण आपका कलीसिया के प्रति प्रेम ठंडा हो गया है? अराधना में हम किसी को दिखाने के लिये नहीं जाते बल्कि यह हमारा व्यक्तिगत फैसला है। क्या आपके यहां कलीसिया में अभी भी लॉकडाउन लगा हुआ है, या आपने अपना पूरा प्रयास किया है कि आपस में मिलना जुलना या इक्ट्ठे होना नहीं छोड़ना है। पौलुस ने लिखा था, ''इस कारण एक दूसरे को शांति दो और एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो।'' (1 थिस्स 5:11)।

आप सुसमाचार के साथ क्या करेंगे?

सनी डेविड

मित्रो, मनुष्य की सबसे विशाल और मूल्यवान वस्तु है, उसकी आत्मा। क्योंकि पृथ्वी पर मनुष्य की आत्मा के अलावा कोई और ऐसी वस्तु

नहीं है जो अमर हो। इस जगत में हर एक वह वस्तु जिसे हम देखते हैं, नाशमान है। चाहे वह वस्तु जमीन पर की हो या आकाश में दिखाई देती हो वे सब की सब समाप्त हो जाएंगी। किन्तु मनुष्य की आत्मा ही पृथ्वी पर केवल एकमात्र ऐसी चीज हैं, जिसे परमेश्वर ने हमेशा के लिये बनाया है। इसीलिये प्रभु यीशु ने एक बार शिक्षा देकर कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले, पर अन्त में अपनी आत्मा को खो दे तो उसे कुछ लाभ नहीं होगा। (मत्ती 16:26)। दूसरी ओर, यीशु ने कहा था, कि यदि मनुष्य को अपनी आत्मा बचाने के लिये कोई बड़ी से बड़ी कुर्बानी भी देनी पड़े तो उससे उसे पीछे नहीं हटना चाहिए। पर यीशु ने कहा था, कि अगर इंसान को अपनी आत्मा को बचाने के लिये अपने हाथ या पांव को भी खोना पड़े; या अपनी आंख या अपने शारीरिक जीवन को भी खोना पड़े तो उसे इससे पीछे नहीं हटना चाहिए। (मत्ती 10:32-39 तथा मरकुस 9:42-48)। यानि पृथ्वी और आकाश के दृष्टिकोण से, मनुष्य की आत्मा ही सबसे बड़ी और कीमती और महत्वपूर्ण वस्तु है। और इसका कारण यह है, कि आत्मिक दृष्टिकोण से मनुष्य को परमेश्वर ने आरंभ में अपनी समानता पर और अपने ही स्वरूप पर बनाया था। स्वयं परमेश्वर भी आत्मा है। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि "परमेश्वर आत्मा है।" (यूहन्ना 4:24)। परन्तु आत्मा का कोई शारीरिक या भौतिक स्वरूप नहीं होता। हम आत्मा का कोई चित्र नहीं बना सकते। हम आत्मा को किसी स्थान या घर में बंद नहीं कर सकते। और जब बाइबल में हम यह पढ़ते हैं, कि मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी समानता पर और अपने स्वरूप पर बनाया था, तो इसका अर्थ यह है, कि आरंभ में मनुष्य परमेश्वर के ही समान पवित्र था- जैसे कि एक नन्हें बालक का जन्म होता है, जिसमें कोई पाप या कलंक नहीं होता है- ऐसे ही आरंभ में मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया था, अर्थात मनुष्य की आत्मा परमेश्वर की ही तरह है, जो स्वयं भी आता है, अमर है। मनुष्य का शरीर नाश हो सकता है, क्योंकि वह नाशमान हैं पर मनुष्य की आत्मा हमेशा विद्यमान रहेगी क्योंकि आत्मा अमर है।

बाइबल यूं तो परमेश्वर के प्रेम की पुस्तक है. इस किताब में परमेश्वर ने जगत के सब लोगों के लिये एक सुसमाचार को प्रदर्शित किया है परन्तु बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये एक बड़ी ही भयानक बात को भी प्रदर्शित किया है। और यह भयानक बात यह है कि पृथ्वी पर हर एक इंसान पाप के वश में है। और परमेश्वर चाहता है, कि हर एक इंसान इस बात की तरफ सारी गंभीरता के साथ ध्यान दें, और इस बात को सुनकर चिंतित हो; और सब बातों की तरफ से अपना ध्यान हटाकर इस एक सवाल पर ध्यान दे, कि मैं अपनी आत्मा को बचाने के लिये क्या करूं? यानि अपनी आत्मा को पाप से बचाने के लिये, पाप के दण्ड से बचाने के लिये और नरक में जाने से बचाने के लिये क्या करूं"? क्योंकि मेरी आत्मा अमर है। मैं शारीरिक दृष्टिकोण से सदा नहीं बना रहूंगा-पर आत्मिक दृष्टिकोण से मैं सदा वर्तमान रहूंगा। इसलिये, मुझे शारीरिक भोजन से भी अधिक आत्मिक भोजन की आवश्यकता है। मुझे शारीरिक वस्त्रों से भी ज्यादा आत्मिक वस्त्रों की जरूरत

है। और मुझे एक शारीरिक घर से भी अधिक आत्मिक घर की आवश्यकता है।

प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं परन्तु हर एक उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। परमेश्वर का वचन हमारी आत्माओं के लिये भोजन है। वह मनुष्य की आत्मा को मुक्ति के वस्त्र पहनाता है; और मनुष्य को उस घर में प्रवेश करके हमेशा के लिये रहने के लिये तैयार करता है, जो मनुष्यों के हाथों से बनाया हुआ घर नहीं परन्तु जिसे परमेश्वर ने स्वयं अपने उन लोगों के लिये तैयार किया है जो उससे डरते हैं और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करते हैं।

आज आप को, अपने दृष्टिकोण से, संसार में सबसे अधिक किस वस्तु की आवश्यकता है? किस चीज को प्राप्त करने में आज आप प्रयत्नशील हैं? किस वस्तु की खोज में आज आप लगे हुए हैं? आप के जीवन में सबसे अधिक महत्व किस वस्तु का है। यदि आप अपने जीवन में पाप से मुक्ति प्राप्त करने की जरूरत को महसूस नहीं करते। अगर आपके जीवन में आपकी आत्मा का महत्व सबसे विशेष नहीं है। तो आप अपने जीवन में एक बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। क्योंकि आप उसे बचाने की चिंता कर रहे हैं जिसे आप नहीं बचा सकते। आप उसे पाने की कोशिश कर रहे हैं जिसे पाकर भी आप को कुछ हासिल नहीं होगा। प्रभु यीशु ने आदेश देकर एक बार इस प्रकार कहा था, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन को प्राप्त करने की चिंता करो जो तुम्हें हमेशा का जीवन दे सकता है, और वह भोजन मैं तुम्हें दे सकता हूं, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे इसीलिये संसार में भेजा हैं (यूहन्ना 6:27)।

यीशु मसीह स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था। उसे परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था। क्योंकि परमेश्वर को मनुष्य की आत्मा की चिंता है। यीशु मसीह को आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व परमेश्वर की इच्छा से और ज्ञान से और उसकी पहले से ठहराई हुई योजना और मनसा से एक क्रूस के ऊपर चढ़ाकर बलिदान किया गया था। और बाइबल में लिखा है, कि इस प्रकार परमेश्वर ने स्वयं सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित किया था। और इसी बात को बाइबल में सुसमाचार कहा गया है। लिखा है, कि परमेश्वर की इच्छा से उसका पुत्र हमारे पापों के बदले में मारा गया था, और गाड़ा गया था, और फिर जी उठा था। और जी उठने के बाद, परमेश्वर का पुत्र अपने चेलों को यह आज्ञा देकर, स्वर्ग पर वापस चला गया था, कि तुम सारे जगत में जाकर इस सुसमाचार का प्रचार करो, और यह सुनकर जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:15-16)।

और यही कारण है, मित्रो, कि क्यों मैं आपको परमेश्वर का यह सुसमाचार फिर सुना रहा हूं। किन्तु, परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने का अपना काम कर दिया है; और मैंने भी आप को उसका सुसमाचार सुना दिया है; और अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप उसके सुसमाचार को मानते हैं या नहीं।

उपासना का आदर्श

जे. सी. चोट

धार्मिक दृष्टिकोण से संसार में आज अनेक प्रकार की उपासनाएं है। जो लोग कैथलिक है उनका उपासना करने का एक अपना ही निराला ढंग है, और ऐसे ही विभिन्न प्रोटैस्टैंट कलीसियाओं के पास भी अनेक भिन्न-भिन्न आदर्श हैं। इस का अर्थ यह हुआ कि उपासना के भिन्न-भिन्न आदर्शों को देखने के लिये यदि आप विभिन्न कलीसियाओं की उपासना सभाओं में जाएं तो इसमें कई सप्ताह लग जाएंगे। ऐसा क्यों है? क्या इस संबंध में प्रभु की ऐसी ही इच्छा हैं?

बाइबल की शिक्षानुसार केवल एक ही कलीसिया है और वह प्रभु की है। (इफिसियों 4:4; मत्ती 16:18)। कलीसिया का आदर्श हमें नए नियम में मिलता है। इस सच्चाई को तथा इस बात को ध्यान में रखकर कि उपासना करने की आज्ञा प्रभु की कलीसिया को दी गई है, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उपासना का केवल एक ही आदर्श दिया गया है।

इस बात से परिचित होने के लिए कि प्रभु आज लोगों से किस प्रकार की उपासना की इच्छा रखता है हमें चाहिए कि हम नए नियम में से देखें। इसके अतिरिक्त, यह जानने के लिये कोई अन्य मार्ग नहीं है। नए नियम को पढ़ने से हमें इस बात का ज्ञान मिलेगा कि प्रभु की इच्छानुसार आज उपासना में हमें क्या करना चाहिए। नया नियम निम्नलिखित बातों को प्रकट करता है:

1. केवल परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

अब शैतान ने मसीह की परीक्षा की थी, तो मसीह ने उससे कहा था, ''कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को ही प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर''' (मत्ती 4:10)।

2. सप्ताह का पहिला दिन उपासना का दिन है।

मसीह के अनुयायीयों को आज्ञा दी गई थी कि सप्ताह के पहिले दिन वे अपना-अपना चंदा रख छोड़ा करे। ''सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करें, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।'' (1 कुरिन्थियों 16:2)।

3. मसीही लोग प्रभु की उपासना करें।

इस बात के उदाहरण हमें मिलते हैं, ''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' (प्रेरितों 2:42)। सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता रहा। (प्रेरितों 20:7)।

4. हमें बताया गया है कि उपासना किस प्रकार करनी चाहिए।

यीशु मसीह ने कहा था, "परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी हैं जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को अपने लिए ढूंढ़ता है, परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें" (यूहन्ना 4:23, 24)।

5. उपासना के पांच नियमों का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

ये हैं, बाइबल अध्ययन (2 तीमुथियुस 2:15), प्रार्थना (प्रेरितों 2:42), भजन गाना (इफिसियों 5:19), प्रभु भोज (मत्ती 26:28), तथा चंदा देना (2 कुरिन्थियों 9:6, 7)। नए नियम में क्योंकि हम उपासना के केवल इन्हीं नियमों के बारे में पढ़ते हैं, इसलिये हमें उपासना में केवल इन्हीं तक सीमित रहना चाहिए।

6. हम से कहा गया है कि हम उपासना सभाओं में इक्ट्ठे होने के प्रति विश्वासी रहें।

इब्रानियों की पत्री का लेखक लिखकर कहता है, और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें, और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो। (इब्रानियों 10:25)।

7. उपासना करने की विधि बड़ी ही सरल तथा स्पष्ट है।

इसे मानना किसी के लिये भी कठिन नहीं है। बल्कि सब इसमें भाग ले सकते हैं।

8. उपासना में जो कुछ भी किया जाता है वह सब प्रभु के वचन की शिक्षा पर आधारित होता है।

हम परमेश्वर के वचन से ही बोलते हैं। (1 पतरस 4:11)। प्रभु की इच्छा के विरूद्ध हम कुछ नहीं करते।

इस बात में मसीह की कलीसिया बड़ी ही विशेष है कि यह उपासना में नए नियम के आदर्श का ही पालन करती है। इस कारण अन्य कलीसियाओं के समान मसीह की कलीसिया की उपासना में कुछ बातें नहीं पाई जाती। उदाहरणार्थ, हमारी उपासना में निम्नलिखित वस्तुएं नहीं होती:

1. हमारी उपासना में बाजे नहीं बजाए जाते। नया नियम बड़े ही स्पष्ट शब्दों में सिखाता है कि हमें परमेश्वर की प्रशंसा में आत्मिक गीत गाना चाहिए। पौलुस कहता है, और आपस में भजन और स्तुति गान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। (इफिसियों 5:19)। इस बारे में हम और अधिक एक अन्य पाठ में देखेंगे।

2. हमारी उपासना में प्रभु-भोज को कुछ विशेष लोगों तक ही सीमित नहीं रखा जाता। बल्कि पौलुस कुरिन्थियों की पत्री में लिखकर कहता है, इसलिए मनुष्य अपने आपको जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पीए। (1 कुरिन्थियों 11:28)।

3. हम दश्मांश नहीं लेते या देते। परन्तु जैसा कि पौलुस लिखकर कहता है कि मसीही लोगों को अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार देना चाहिए (1 कुरिन्थियों

16:2) इसलिये हम ऐसा ही करते हैं।

4. हम प्रभु के दिन के अतिरिक्त अन्य किसी दिन चंदा नहीं इक्ट्ठा करते और न ही मैम्बरशिप फ़ीस इक्ट्ठा करते हैं। अन्य कलीसियाएं अनेक प्रकार बार और जब भी मिलती है, चाहे वह सप्ताह का पहिला दिन हो या कोई और दिन हो, चंदा इक्ट्ठा करती हैं। परन्तु मसीही लोगों को सप्ताह के पहिले दिन में देने की आज्ञा दी गई है। (1 कुरिन्थयों 16:2)।

5. हमारी उपासना में गाने के लिये, गाने वालों का कोई विशेष झुंड (क्वायर) नहीं होता। बाइबल की शिक्षा के अनुसार प्रत्येक मसीही जन को गाना चाहिए, सो इसलिये मंडली में हम सब मिलकर गाते हैं। पौलुस एक जगह कहता है, ''मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा (1 कुरिन्थियों 14:15)।

6. हम ईस्टर और बड़ा दिन जैसे उपासना के विशेष दिनों को नहीं मानते। गलतियों की पुस्तक में मसीही भाईयों को चेतावनी देकर पौलुस कहता है, तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो। मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे लिये किया है, वो व्यर्थ ठहरे। (गलतियों 4:10, 11)।

7. हम केवल महीने में एक बार या तीन महीने में एक बार या साल में एक बार प्रभु भोज में भाग नहीं लेते है। पर हम प्रभु-भोज में प्रत्येक रविवार को अर्थात प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन भाग लेते हैं। इस विषय में नए नियम में हम पढ़ते हैं कि प्रथम मसीही लोग ठीक ऐसा ही किया करते थे। (प्रेरितों 20:7)। पर कौन से सप्ताह के पहिले दिन? किसे यह अधिकार दिया गया है कि वह इस बात का निश्चय करे? प्रत्येक सप्ताह में एक पहिला दिन है और उतनी ही बार अर्थात प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन उसमें भाग लेने के लिए हमें एकत्रित होना चाहिए। हम जितनी बार उपासना करने, चंदा देने, इत्यादि के लिये इक्ट्ठे होते हैं उतनी ही बार हम प्रभु भोज लेते हैं।

8. हम प्रभु की उपासना मनुष्यों के ठहराए धर्मोपदेश और रीतियों तथा विधियों के द्वारा नहीं करते। प्रेरित पतरस एक जगह कहता है, क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोना अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ (1 पतरस 1:18)। फिर पौलुस कहता है, चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं (कलुस्सियों 2:8)।

9. हम मनुष्यों की बनाई शिक्षाओं तथा उनके दिए धर्मोपदेश को नहीं मानते। प्रेरित इस संबंध में कहता है, जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उनके समान जो संसार में जीवन बिताते हैं मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षानुसार और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो, कि यह न छूना, उसे न चखना और उसे हाथ न लगाना? (क्योंकि ये सब वस्तुएं काम में लाते-लाते नाश हो जाएंगी)। (कुलस्सियों 2:20-22)।

10. हम उपासना में पुराने नियम की व्यवस्था का पालन नहीं करते। सब्त दशमांश तथा बाजों के उपयोग इत्यादि को उचित ठहराने के लिए बहुतेरे लोग पुराने नियम के पास जाते हैं। परन्तु ऐसा करके वे बाइबल के इस भाग का दुरुपयोग करते हैं। पुराने नियम की व्यवस्था अब हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा नहीं है, परन्तु उसके स्थान पर परमेश्वर ने हमें अपना एक नया नियम दिया है। (2 कुरिन्थियों 3, इब्रानियों 10:9; यूहन्ना 1:17)।

इसलिये हमें सब बातों में केवल नए नियम में लिखी आज्ञाओं को ही बिना उनमें कुछ बढ़ाए या घटाएं और बिना बदलाव किए मानना चाहिए। (प्रकाशितवाक्य 22; 18, 19; गलतियों 1:7-9) उसमें लिखी बातें मनुष्य को प्रत्येक भले काम के लिये तत्पर बनाती है। (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। वे सभी बातें जो जीवन और भक्ति के प्रति आवश्यक हैं, इसके पृष्ठों में मिलती हैं। (2 पतरस 1:3)।

अब यदि सभी लोग उपासना के इस आदर्श को अपना लें और इसी प्रकार अन्य सभी बातों में भी, जिन्हें वे धर्म के नाम पर कहते तथा करते हैं, तो हम सब एक हो सकते हैं। निश्चय ही प्रभु ने मुझे एक तरह से और आपको किसी दूसरी तरह से उपासना करने की आज्ञा नहीं दी है। किन्तु वह यह चाहता है कि हम सब उसकी उपासना एक समान करें। किन्तु हम सब की उपासना एक समान होगी जब हम सब उपासना के उस सच्चे आदर्श का पालन करेंगे जिसे उसने हमें दिया है।

यीशु के विषय में ग़लत जानकारी

ऐफ़ डेविड

यीशु प्रचार करता हुआ फिलिप्पी के देश में आया और ''चेलो से पूछा कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं, उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते है। उस ने उनसे कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? श्मौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।'' (मत्ती 16:13-16)। मित्रों, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में इसलिये भेजा ताकि वह जगत के पापों के लिये अपने प्राणों को क्रूस पर बलिदान करे। (यूहन्ना 3:16)। अधिकतर लोग यीशु के इस पृथ्वी पर जन्म लेने के उद्देश्य को नहीं समझते। लोगों की धारणा है कि यीशु बीमारों को चंगा करने तथा भूखों को खाना खिलाने आया था। यीशु के आने का विशेष उद्देश्य भौतिक नहीं परन्तु आत्मिक बातों को महत्व देना था। और वह किसी विशेष जाति के लिये नहीं आया था। वह सबके लिये आया था।

यीशु ने कहा था, ''मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)। वह जगत की ज्योति है, अच्छा चरवाहा है। एक महान वैद्य है। राजाओं का राजा है, तथा जगत का उद्धारकर्त्त है। (यशायाह 9:6-7)।

जब वह इस पृथ्वी पर था, तब वह लोगों को परमेश्वर के राज्य के विषय में बताता था। वह लोगों को सिखाता था और लोग उसकी शिक्षा से चकित हो जाते थे। फ़रीसी भी उसकी शिक्षाओं से चकित हो जाते थे। वे यह भी चाहते थे कि उसकी कोई गलती पकड़ें। उसके ऊपर वे कई प्रकार के दोष लगाते थे। परन्तु एक विशेष बात जो यीशु में हम देखते हैं कि उसके सिखाने का अंदाज बहुत अलग था।

आज सबसे बड़ी दुख की बात यह है कि यीशु के विषय में, कई लोगों के मनों में गलत धारणाएं है। वह उसकी बातों को समझ नहीं पाते। जब यीशु क्रूस पर लटका हुआ चिल्ला रहा था, ''हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' तब कई लोग यह सोच रहे थे कि वो ऐल्लियाह को पुकार रहा है। लोग उसकी हंसी उड़ाकर कहते थे कि यह अपने आपको परमेश्वर का पुत्र कहता है और अपने आपको बचा नहीं सकता। उसकी बातों को वे गलत तरीके से समझते थे। कई लोग यह सोचते थे कि वह इस पृथ्वी पर अपना राज्य बनाने आया है। जबकि यीशु ने कहा था कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है। (यूहन्ना 18:36)। यीशु अपना अत्मिक राज्य बनाने आया था। उसका यह राज्य उसकी कलीसिया है। (कुलु. 1:13)।

यीशु आज लोगों को निमंत्रण देकर कहता है, ''हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' (मत्ती 11:28) कई लोग यीशु की इस बात को भी गलत समझते थे। उनकी सोच यह थी कि यीशु हमारी बीमारी को ठीक कर देगा, हमें मुश्किल से भरी जिंदगी से छुटकारा दे देगा। जबकि यीशु ने हमेशा आत्मा के उपर महत्व दिया। हमारी आत्मा का उद्धार होना महत्वपूर्ण है। क्योंकि यीशु ने कहा था यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपनी आत्मा की हानि उठाये तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती 16:26)। यीशु यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि मनुष्य को कितनी भी शानओ-शोकत या धन-दौलत मिल जाये और वह अपनी आत्मा को नरक के योग्य बना दे तो उसे क्या लाभ होगा?

यीशु के आश्चर्यक्रमों को लोग समझ नहीं पाते थे। यीशु जिस प्रकार के अद्धभुत कार्य करता था, आज कोई मनुष्य ऐसे कार्य नहीं कर सकता। दावा तो बहुत लोग करते है परन्तु आश्चर्यक्रम करते नहीं है। मृतकों को जीवित करना और पांच रोटी दो मछलीयों से पांच हजार लोगों को खाना खिलाना। हमें जानना चाहिए कि आश्चर्यक्रमों को करने का उद्देश्य यह था ताकि लोग विश्वास करें कि वह परमेश्वर का पुत्र है। प्रेरितों तीन अध्याय में पतरस और यूहन्ना ने एक जन्म से लंगड़े को उसी क्षण चंगा कर दिया था। उन्होंने किसी प्रकार का धक्का नहीं दिया, शोर नहीं मचाया और न ही कोई तमाशा किया जैसा कि कई प्रचारक आज करते हैं। आज कई लोग पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विषय में भी अनुचित धारण रखते हैं। हम जानते हैं कि प्रेरितों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था। यह बपतिस्मा एक आज्ञा नहीं बल्कि प्रतिज्ञा थी तथा कुरनेलियुस ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इसलिये लिया था ताकि यहूदी समाज से जो आये थे वे जाने कि जैसे परमेश्वर को यहूदी स्वीकार्य हैं वैसे ही गैर-यहूदी भी स्वीकार्य है अर्थात परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।

अधिकांश लोग बाइबल की बातों को इसलिये नहीं समझ पाते क्योंकि वे बाइबल का अध्ययन नहीं करते। यीशु के दोबारा आने के विषय में लोगों के मनों में बहुत सी गलतफहमियां है। पिछले वर्षों में कई लोगों ने भविष्यवाणियां तो की थी

कि वह इस वर्ष में या इस तारीख पर आयेगा परन्तु वे सब झूठे ठहरे। बाइबल बताती है कि वह चोर की नाई अचानक आयेगा यानि जब लोग खा-पी रहे होंगे। (2 पतरस 3:8-10)।

बाइबल हमें बताती है कि हमें किसी के धोखे में नहीं आना है। पौलुस ने कहा था, "धोखा न खाओ।" (गलतियों 6:7)। यदि आप यीशु और उसके विषय में गलतफ़हिमियों से बचना चाहते हैं तो अपनी बाइबल का अध्ययन कीजिये, झूठे प्रचारकों के धोखे में न आये। पौलुस ने कहा था, "जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो, क्योंकि ऐसे लोग सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं (रोमियों 16:17)।

मसीह का बपतिस्मा

जॉन स्टेसी

इस संबंध में हमने इससे पहले देखा था कि यीशु स्वयं चलकर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास आया था और अपनी इच्छा से उस से बपतिस्मा लिया था। हमने ऐसे चारों कारणों पर भी विचार किया था जिनके लिये यीशु ने बपतिस्मा लिया था, और वे कारण थे, परमेश्वर की धार्मिकता को पूरा करने के लिये, सब लोगों के सामने एक उदाहरण रखने के लिये, अपने को मसीह सिद्ध करने के लिये और अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने के लिये।

अब, यीशु के बपतिस्मे के ही बारे में इस पाठ में हम कुछ और बातों पर विचार करेंगे। सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि जो बपतिस्मा यूहन्ना क्रूस पर यीशु की मृत्यु से पहले देता था, हम पढ़ते हैं प्रेरितों 16:4 में कि यूहन्ना ने यह कहकर मनफिराव का बपतिस्मा दिया था कि जो मेरे बाद आने वाला है उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना। ऐसे ही आज भी जब हम यीशु का बपतिस्मा लेते हैं तो बपतिस्मा लेने से पहले यीशु पर विश्वास करना आवश्यक है। क्योंकि मरकुस 16:16 में लिखा है कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।

दूसरी बात यूहन्ना के बपतिस्मे के संबंध में हमें यह मिलती है कि बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना जरूरी था। मत्ती 3:8 में लिखा है, कि जब यूहन्ना ने लोगों को अपने पास बपतिस्मा लेने को आते देखा था उसने उन से कहा था कि मन फिराव के योग्य फल लाओ। आज भी बपतिस्मा लेने से पहले लोगों को मन फिराने की आवश्यकता है। जैसे कि पतरस ने प्रेरितों 2:38 में लोगों से कहा था कि मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे।

तीसरे स्थान पर, यूहन्ना के बपतिस्मे के संबंध में हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा लेने से पहले अंगिकार किया जाता था। मत्ती 3:6 में लिखा है, और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। अब आज भी जब लोग मसीह का बपतिस्मा लेते हैं तो उन्हें बपतिस्मा लेने से पहले अंगीकार करना पड़ता है। यद्यपि अपने पापों का नहीं बल्कि इस बात का कि मसीह परमेश्वर का

पुत्र है, कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है। खोजे के मन परिवर्तन के संबंध में हम पढ़ते हैं कि मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है। उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े और उसने उसे बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों 8:36-38)।

चौथी बात हम यह देखते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये था। मरकुस 1:4 में लिखा है, यूहन्ना आया जो जंगल में बपतिस्मा देता था और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था। आज क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद परमेश्वर की योजना में कोई परिवर्तन नहीं आया था। क्योंकि प्रेरितों 22:16 में हम पढ़ते हैं कि हनन्याह ने शाऊल के पास जाकर उससे कहा था कि अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।

अंत में हम देखते हैं कि जो बपतिस्मा यूहन्ना यीशु की मृत्यु से पहले देता था, और जो बपतिस्मा यीशु के चेले, उसकी मृत्यु के बाद देते थे उनमें क्या अंतर था। इस संबंध में हम देखते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा लेने से पवित्रात्मा का दान नहीं मिलता था, किन्तु मसीह का बपतिस्मा लेने से वह प्राप्त होता है। (प्रेरितों 2:38) यूहन्ना का बपतिस्मा किसी भी नाम में नहीं दिया जाता था, किन्तु मसीह का बपतिस्मा दिया जाता है। (मत्ती 28:19, प्रेरितों 2:38)। यूहन्ना का बपतिस्मा इसलिये दिया जाता था कि लोग उसे लेकर आने वाले राज्य में प्रवेश करने के लिये अपने आप को तैयार करें। यूहन्ना के बारे में लूका 1:17 में लिखा है कि, प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे। पर मसीह की मृत्यु के बाद अब उसका बपतिस्मा लेकर लोग उसके राज्य अर्थात उसकी कलीसिया में प्रवेश करते हैं। (यूहन्ना 3:5; प्रेरितों 2:38, 41, 47, 1 कुरिन्थियों 12:13; गलतियों 3:27)।

प्रभु के आने तक

(रोमियों 13:8-14)

डेविड रोपर

हम रोमियों 12:1 में आरंभ किए व्यावहारिक भाग के अन्त में आ पहुंचे हैं। इस पाठ के लिए वचन के बीच में हमने ये वचन पढ़े थे, और समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है (13:11)। उद्धार प्रभु के वापस आकर हमें साथ ले जाने पर हमारे

अंतिम उद्धार को कहा गया है। आने वाली इस घटना के प्रकाश में पौलुस ने कहा कि ऐसा ही करो। यह वाक्यांश आगे और पीछे का ध्यान दिलाता है। क्योंकि प्रभु का आना जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब निकट है, इसलिए हमें बहुत कुछ करने की आवश्यकता है जिसकी आज्ञा मसीही लोगों को पौलुस ने अगली आयतों में दी। इसके अलावा हमें पहले दिए गए निर्देशों पर भी ध्यान लगाना आवश्यक है। ऐसा ही करो, का अर्थ 12:1 से वचन पाठ के अंत तक सिखाई गई हर बात हो सकती है, पर यह पाठ 13:8-14 से मेल खाएगा।

यह तथ्य कि प्रभु वापस आएगा, पहली सदी के मसीही लोगों के दिलो दिमाग पर छाया हुआ था। वे पुकारते थे मारानाथा (1 कुरिन्थियों 16:22)। जिसका अर्थ है हे प्रभु आ। वे प्रार्थना किया करते थे, हे प्रभु यीशु आ, (प्रकाशितवाक्य 22:20)। कहते हैं कि वे जो भी कर रहे हो, बीच-बीच में रूककर वे आकाश की ओर देखते थे। आखिर यीशु ने कहा था कि वह बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ बादलों में आएगा (मरकुस 13:26; देखें मत्ती 24:30; 26:64; मरकुस 14:62; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17; प्रकाशितवाक्य 1:7)। आरंभिक मसीही लोगों के लिए द्वितीय आगमन का सुनिश्चित होना जबर्दस्त प्रेरणा थी। इसमें जो बनना चाहिए और जो करना चाहिए उस सब के लिए हमारे लिए भी यह जबर्दस्त प्रेरणा होनी चाहिए।

इस पाठ का नाम प्रभु के आने तक, रखा गया है। प्रभु के आने तक, हमें क्या करना चाहिए? रोमियों 13:8-14 उन दो कामों का ध्यान दिलाता है जो उस बड़े दिन की प्रतिक्षा करते हुए हर मसीही की विशेषता होनी चाहिए।

प्रेमी जन बनें (रोमियों 13:8-10)

चुकाया न गया कर्ज (आयत 8क, ख)

इस भाग का आरंभ विचारोत्पादन करने वाली आज्ञा के साथ होता है और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो (आयत 8क)। कई लोग इन शब्दों का अर्थ यह लेते हैं कि मसीही व्यक्ति को किसी प्रकार के कर्ज के लेन-देन में शामिल नहीं होना चाहिए। अमेरिका में रहने वाले बहुत से लोग जो बड़ी मंदी (1930 के दशक) में रहते थे, उनका यह व्यवहार था, यदि नकद नहीं ले सकते, तो आप इसे मत लें। इस बात पर मेरी उनके साथ सहानुभूति है, पर मुझे नहीं लगता कि पौलुस के दिमाग में यह बात थी।

किसी बात में किसी के कर्जदार न हो आयत 7 का अगला पड़ाव है, जिसमें कहा है हर एक का हक़ चुकाया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए उसे महसुल दो; जिससे डरना चाहिए उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो। संदर्भ में, किसी बात में किसी के कर्जदार न हो का अर्थ है, जो कुछ मैंने तुम्हें अभी-अभी करने के लिए बताया है ऐसा ही करो, कर अदा करो और सरकारी अधिकारियों का सम्मान व आदर करो। इसमें मूल विचार यह है कि अपना फर्ज निभाने में लापरवाही न करो।

क्या सारे कर्ज चुका दो, का नियम केवल सरकार द्वारा लिए कर्ज से बढ़कर और बातों के लिए लागू हो सकता है? शायद पौलुस ने इसके साथ एक ऐसी शिक्षा भी मिलाई जो अधिक सामान्य है। बीच-बीच में हमें याद दिलाया जाना आवश्यक

है कि परमेश्वर की संतान को अपने कर्ज चुकाना आवश्यक है। भजन संहिता 37:21 कहता है, दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं। ऐसे मसीही लोगों द्वारा जो अपने बिलों का भुगतान नहीं करते मसीह के कार्य को बड़ी हानि हुई है।

अभी जब हम इस विषय पर ही हैं मैं एक चेतावनी देता हूं। जब हम रोमियों 13:8 के पहले भाग की बात करते हैं, कुछ मसीही लोगों को केवल इतना ही सुनाई देता है कि, जो कुछ आपने लिया है यदि आप पूरा चुका दें तो कोई दिक्कत नहीं है। इसलिए उनका सोचना यह है कि जब तक वे किसी न किसी तरीके से कर्ज वापस कर सकते हैं, तब तक अपने आपको आर्थिक कर्ज में डुबोने में कोई हर्ज नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें अपने बिलों का भुगतान करने के लिए पूरा समय और शक्ति लगा देनी पड़ती है और कई बार उनके पास प्रभु के लिए, अपने परिवारों के लिए या दूसरों के लिए समय या शक्ति नहीं रहती। वित्त के प्रति यह सोच बाइबल के कई नियमों का उल्लंघन करती हैं, जिसमें आयत 8 वाला नियम भी है। आपस के प्रेम को छोड़ आयत के पहले भाग में लिखा गया है, कर्ज को बढ़ने मत दो।

आर्थिक तौर पर जिम्मेदार होना एक महत्वपूर्ण विषय है, पर मैं इस विषय पर आगे बढ़ना चाहता हूं जो पौलुस के मन में था। उसने कहा, आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो (आयत 8क, ख)। हमें अपने कर्ज चुकाने आवश्यक है और एक ऐसा कर्ज है जो हम कभी पूरा नहीं चुका सकते। वह एक दूसरे के प्रेम का कर्ज है। स्टूअर्ट ब्रिस्को ने कहा है–

लगता है कि प्रेम लोगों के मनों में इस प्रकार रहता है जैसे किसी अच्छे आदर्श और सुखद विकल्प के बीच में अतिरिक्त हो। परन्तु प्रेरित यह जोर देता है कि वास्तविक और कर देने और निजी कर्ज वापसी के रूप में प्रेम एक दायित्व है।

हमें एक दूसरे को, वाक्यांश का अर्थ आमतौर पर साथी मसीही होता है (देखें 12:10), और पौलुस के दिमाग में यही लोग होंगे। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे यह प्रासंगिकता कलीसिया के साथी सदस्यों से अधिक व्यापक है। हमें हर किसी से प्रेम का कर्ज लौटाना है।

हम सब लोगों से प्रेम करने के कर्जदार क्यों है? क्योंकि प्रभु ने हमसे प्रेम किया है। यूहन्ना ने लिखा, हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए (यूहन्ना 4:11)। इस पक्के कर्ज के बारे में कई लेखक ओरिगन को उद्धृत करते है, तुम्हारा न चुकाया गया कर्ज केवल प्रेम का कर्ज हो यदि वह कर्ज जो पूरा चुकाने की तुम्हारी पूरी कोशिश होनी चाहिए, पर इसे चुकाने में सफल कभी नहीं होंगे। एक टीका के लेखकों ने लिखा है :

उस प्रेम के लिए जो मसीह ने हम से किया है हम स्थाई तौरपर उसके कर्जदार हैं। इस कर्ज को लौटाना आरंभ करने का ही केवल एक ढंग दूसरों से प्रेम करना है। मसीह का प्रेम हमारे प्रेम से असीमित रूप से बड़ा होगा इसलिए हमारी अपने पड़ोसियों से प्रेम रखने की जिम्मेदारी बनी ही रहेगी।

व्यवस्था पूरी हुई (आयतें 8ग–10)

चर्चा को जारी रखते हुए पौलुस ने एक दूसरे से प्रेम रखने के महत्व का एक

कारण बताया- क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। मूल वचन में इसी तरह व्यवस्था के लिए लॉ शब्द से पहले पद नहीं है। पर आयत 9 में पौलुस ने व्यवस्था से उद्धृत किया (निर्गमन 20; व्यवस्थाविवरण 5)। अंग्रेजी के अनुवादकों ने यह संकेत देने के लिए कि उसका मुख्य अर्थ व्यवस्था ही है। जब पौलुस ने कहा कि क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है वही व्यवस्था को पूरा करता है। उसके दिमाग में पूरी व्यवस्था नहीं, बल्कि केवल वह भाग, जो व्यक्ति के अपने साथी से संबंध को दिखाती है।

आयत 9 में पौलुस ने बताया कि उसके दिमाग में क्या था। क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, चोरी न करना, लालच न करना और इनको छोड़ कोई और भी आज्ञा हो तो सबका सारांश इस बात में पाया जाता है, अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। यह आयत निर्गमन 20 और वयवस्थाविवरण 5 की दस आज्ञाओं में चार उद्धृत करते हुए आरंभ होती है। इन आज्ञाओं को आमतौर पर दो भागों में बांटा जाता है, पहली चार आज्ञाएं परमेश्वर के साथ संबंध में जोड़ी हैं, जबकि अंतिम चार का संबंध दूसरों के साथ हमारे संबंध थे। पौलुस के उदाहरण इस दूसरे समूह के लिए गए है-

- सातवीं आज्ञा, तू व्यभिचार न करना, (आयत 9क; 20:14)। दस आज्ञाओं में व्यभिचार, वह संभवतया हर प्रकार का शारीरिक पाप शामिल कियागया था। यह आज्ञा विशेष तौर पर उसके प्रति वफादार रहने के संबंध में थी, जिससे, विवाह की शपथ खाई हो। यह आज्ञा घर को बचाती थी।

- छठी आज्ञा, हत्या न करना, (आयत 9ख; देखें निर्गमन 20:13)। यह किसी दूसरे का प्राण जान-बूझकर लेने के बारे में है। यह आज्ञा जीवन की रक्षा करती थी।

- आठवीं आज्ञा, चोरी न करना, (आयत 9ग; देखें निर्गमन 20:15)। यह बिना अनुमति के किसी दूसरे की चीज को लेने के बारे में है। यह आज्ञा सम्पत्ति की रक्षा करती थी।

- दसवीं आज्ञा, लालच न करना, (आयत 9घ; देखें निर्गमन 20:17)। लालच करने का अर्थ किसी ऐसी चीज को पाने की जबर्दस्त इच्छा है, जो किसी दूसरे की हो। यह आज्ञा मन की रक्षा करती है।

ध्यान दें कि पौलुस ने निर्गमन 20 के कर्म की नकल नहीं की। इसके अलावा उसने पांचवीं और नौवीं आज्ञाओं को छोड़ दिया, जिसमें कहा गया है, अपने पिता और माता का आदर कर और झूठी गवाही न देना। (यह और दूसरी आज्ञाएं आयत 9 के वाक्यांश और कोई भी आज्ञा वाक्यांश में शामिल है)। आज्ञाओं के साथ पौलुस का सामान्य व्यवहार यह संकेत देता है कि वह दस आज्ञाओं को फिर से लागू करने की कोशिश नहीं कर रहा था, बल्कि वह अधिकतर लोगों द्वारा माने जाने वाले नैतिक दायित्वों की सूची बना रहा था, जो भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए सतर्क है।

पौलुस ने कहा कि ऐसी सब आज्ञाओं, का सारांश इस बात में पाया जाता है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख (रोमियों 13:9ड.)। जब यीशु से पूछा गया, हे गुरू व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? (मत्ती 22:36), तो उसने उत्तर दिया-

तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी

बुद्धि के साथ प्रेम रख (देखें व्यवस्थाविवरण 6:5)। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख (देखें लैव्यव्यवस्था 19:18) (22:37-39)।

इस वचन में पौलुस का ध्यान दूसरों के साथ हमारे संबंध पर था इसलिए उसने उस बात पर मन लगाए रखा जिसे यीशु ने दूसरी (बड़ी आज्ञा) कहा था। तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख अनुवादित शब्द पड़ोसी, निकट से लिया गया। पड़ोसी का मूल अर्थ निकट/का हो सकता है, परन्तु धन्य सामरी के दृष्टांत में यीशु ने स्पष्ट किया पड़ोसी शब्द उस व्यक्ति पर ही लागू नहीं होता जो हमारे निकट रहता है। इसमें वह हर व्यक्ति जो जरूरत के समय हमारे सम्पर्क में आता है (देखें लूका 10:25-37)।

मुझे शायद यह कहना चाहिए कि अपने समान शब्दों का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमें यह आज्ञा दी है कि अपने आप से प्रेम रखें, बल्कि इनमें यह माना गया है कि आमतौर पर लोग अपने आप से प्रेम करते हैं। यानी अधिकतर लोग यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी बुनियादी आवश्यकताएं जैसे रोटी, कपड़ा और मकान पूरी हो, इसके लिए पूरी कोशिश करते हैं। ऐसे ही हमें दूसरों के प्रति चिंतित होकर और उनकी भौतिक, भावनात्मक और आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करते हुए प्रेम करना चाहिए।

दूसरों से प्रेम करने पर चर्चा जारी रखते हुए हम यह पढ़ने की उम्मीद कर सकते हैं, प्रेम पड़ोसी का भला करता है। इसके बजाय पौलुस ने कहा, प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता (रोमियों 13:10क)। उसने सकारात्मक के बजाय नकारात्मक का इस्तेमाल क्यों किया? संभवतया क्योंकि वे चार आज्ञाएं जो उसने अभी चलाई थी नकारात्मक रूप में थी, व्यभिचार न करना, हत्या न करना चोरी न करना, लोभ न करना। यदि हम वैसे प्रेम रखते हैं जैसे हमें रखना चाहिए तो हम इन सभी नियमों को और अपने साथी के बारे में किसी भी और नियम को मानेंगे। इस कारण पौलुस ने कहा कि प्रेम व्यवस्था को पूरा करना है (8:10ख)।

मैं यह स्पष्ट कर दूं कि आयत 10 में पौलुस ने कया नहीं कहा। वह यह नहीं कह रहा था कि प्रेम व्यवस्था को पूरा करना है, इसलिए हमें परमेश्वर की व्यवस्था की कोई आवश्यकता नहीं रहीं। कुछ देर पहले एक लहर में यह नारा लगाया गया था कि एक मात्र व्यवस्था प्रेम है। इस लहर में शामिल लोग अपने आपको डॉक्ट्रिन और नैतिकता के बारे में बाइबल की सभी आज्ञाओं से स्वतंत्र घोषित करते थे। पुनः मैं कहता हूं कि पौलुस का उद्देश्य परमेश्वर द्वारा दी गई हर व्यवस्था को देना नहीं था। ऐसा निष्कर्ष रोमियों 12-16 में कहीं पौलुस की अधिकतर बातों को नकार देगा। जॉन आर, स्टॉट ने लिखा है-

बिना स्पष्ट नैतिक मापदण्ड के प्रेम अपने आप में प्रबंध नहीं कर सकता। इसीलिए पौलुस ने यह नहीं लिखा कि प्रेम व्यवस्था का अंत है, बल्कि उसने यह लिखा कि प्रेम व्यवस्था को पूरा करता है। क्योंकि प्रेम और व्यवस्था को एक दूसरे की आवश्यकता है, प्रेम को दिशा के लिए व्यवस्था की आवश्यकता है, जबकि व्यवस्था को अपनी प्रेरणा के लिए प्रेम की आवश्यकता है।

क्या पौलुस यह कह रहा था कि हमें परमेश्वर के नियमों की (जो नये नियम में दिए गए हैं) कोई आवश्यकता नहीं रही? यदि नहीं तो फिर वह क्या कह रहा था। जैसा कि पहले ही सुझाव दिया था कि वह यह कह रहा था कि प्रेम हमें आयत 9 में दी गई आज्ञाओं को मानने (पूरा करने) की प्रेरणा देता है। अपनी पत्नी से प्रेम रखने वाला आदमी उसका विश्वास योग्य होता है। यदि कोई किसी भाई से प्रेम रखता है, तो वह उसे हानि नहीं पहुंचाएगा और बेशक उसकी हत्या नहीं करेगा। जो दूसरों से प्रेम रखता है वह उन्हें लूटेगा नहीं। दूसरे लोगों का भला होने पर वह आनन्दित होगा और उनकी चीजों का लालच नहीं करेगा।

मैं यह भी सुझाव देता हूं कि परमेश्वर ने लोगों को नियम इसलिए दिए कि वे परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति प्रेमी व्यक्ति के व्यवहारिक ढंग सीखें। इसलिए जब कोई प्रेम करना सीखता है तो वह परमेश्वर की व्यवस्था के उस बड़े उद्देश्य को पूरा कर रहा होता है।

जब तक प्रभु न आए, हमें क्या करना चाहिए। हमें लोगों से प्रेम करना सीखना चाहिए।

सब कुछ प्रभु के नाम में करो

डेविड एंगुईश

प्रभु के नाम में, कलीसिया की गतिविधयां

पापियों को उद्धार की पेशकश का दान केवल यीशु के अधिकार से दिया जा रहा है। किसी का उद्धार तभी हो सकता है जब वह यीशु द्वारा स्थापित शर्तों को पूरा करता है, जिसके पास सारा अधिकार है। वही अधिकार उद्धार के बाद मसीही लोगों के जीवनों में दिया जाता है। उद्धार के विशेष कार्यों और किए जाने वाले के संबंध में प्रयुक्त के नाम में वाली भाषा ही मसीही गतिविधियों के संबंध में नये नियम में इस्तेमाल की गई है।

पौलुस ने कुरिन्थिुस के मसीही लोगों को हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से (1 कुरिन्थियों 1:10) आपस में एक होने के लिए कहते हुए उनमें पाई जाने वाली फूट के लिए उन्हें डांटा। उन्हें अपने पिता की पत्नी के साथ अवैध संबंध में शामिल व्यक्ति का सामना यह कहते हुए करने को कहा कि उस व्यक्ति को हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से शैतान के सुपुर्द कर दो (1 कुरिन्थियों 5:4)। इफिसियों 5:17-20 में पौलुस ने पाप के पुराने जीवन से नये जीवन में अंतर बताया। (इफिसुस के लोगों से अपने परमेश्वर के निकट आने और पवित्र आत्मा से भरपूर होने को कहा। उसकी आज्ञाओं में से एक यह होती थी सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो (आयत 20)। थिस्सलुनीके की कलीसिया को भी ऐसा ही निर्देश दिया गया। उन्हें ऐसे सुस्त भाइयों का सामना करना पड़ रहा था जो अनुचित चाल चलते, और जो शिक्षा उन्होंने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करते थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से ऐसे भाइयों से अलग रहने को कहा।

नया नियम बार-बार मसीही लोगों को कलीसिया में किए जाने वाले कामों में यीशु का अधिकार रखने की आवश्यकता को दिखाता है। उस सच्चाई की सबसे अधिक स्पष्ट बात कुलुस्सियों 3:17 में है। पौलुस ने यहां लिखा है, वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

पौलुस कह रहा था कि कलीसिया में की जाने वाली सब बातें यीशु के अधिकार से होनी चाहिए। इस वाक्यांश का अर्थ यहां जो भी कर सको हो सकता है। अपने विश्वास को व्यवहार में लाने के लिए हम जो कुछ भी आवश्यक समझते हैं वह यीशु के अधिकार के अधीन होना चाहिए। पौलुस ने सिखाया कि वचन से या काम में हम जो भी करते हैं वह यीशु के अधिकार से होना चाहिए। जोर देने के लिए उसने सब शब्द को दोहराया। उसने घोषणा की कि वचन या काम में, जो कुछ भी करते हैं वह प्रभु यीशु मसीह के नाम से होना चाहिए।

कुलुस्सियों की पूरी पुस्तक में पौलुस ने सामान्य रूप में सृष्टि में और कलीसिया के सिर के रूप में यीशु प्राथमिकता पर ध्यान दिया (कुलुस्सियों 1:15-20)। उसने विश्वास की अन्य प्रणालियों के ऊपर उसके अधिकार, विशेषकर मानवीय फिलासफी और मूसा की व्यवस्था की बात करते हुए (कुलुस्सियों 2:8-23) की ओर ध्यान दिया। मसीह के श्रेष्ठ होने के कारण कुलुस्सियों 2:12 में दिया है, जहां पौलुस ने मसीही लोगों को याद दिलाया कि वे उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। इस तथ्य के प्रकाश में उन्हें नये लोगों के लिए जीना था पर झूठे शिक्षकों से गुमराह नहीं होना था (कुलुस्सियों 3:1-11)।

परमेश्वर का भय मानने वाली माताओं का महत्व

थॉमस बैंकसले

प्रेरितों 16:1 में तीमुथियुस से हमारा परिचय पहली बार होता है। हमें बताया जाता है कि उसकी माता यहूदिन थी और उसका पिता यूनानी था। हमें इस तथ्य का भी पता चलता है कि वह एक चेला था और आस-पास के इलाकों के भाइयों में उसका अच्छा नाम था। तीमुथियुस के मसीही बनने के बारे में अधिक नहीं बताया गया है। परन्तु हम जानते हैं कि उसका विश्वास पहले उसकी नानी लोइस में और उसकी माता यूनीके में था (2 तीमुथियुस 1:5)। यह प्रश्न छोटा सा है, परन्तु है बहुत गंभीर कि यदि तीमुथियुस को उसकी मां ने सिखाया न होता, या उसकी मां को उसकी मां ने न सिखाया होता, तो तीमुथियुस कहां होता? उन सब लोगों के जीवनों पर ध्यान करें जिन पर पौलुस के साथ घूमते हुए और बाद में इफिसुस में अपना काम करते हुए तीमुथियुस ने प्रभाव डाला था। यदि तीमुथयुस

को उसकी माता के द्वारा और उसकी नानी के द्वारा विश्वास में अगुवाई न दी गई होती तो वह कहां होता? प्रभाव के महत्व को कभी पूरी तरह से नापा नहीं जा सकता, परन्तु हम जानते हैं कि इसमें बड़ी सामर्थ है। शायद सबसे बड़ा प्रभाव परमेश्वर का भय मानने वाली माता का ही है।

शमौन कहता है

रॉयस फ्रैड्रिक

प्रेरितों 2 से आरंभ करके शमौन पतरस को हम बड़ी निडरता से सुसमाचार सुनाते हुए देखते हैं। इससे पहले मत्ती 16:16 में उसने यीशु का अंगीकार किया था कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। परन्तु उसका प्रेरितों 2 तक का मार्ग इतना आसान नहीं था। यीशु के साथ चलते हुए पतरस ने कई बार उन बातों में जो उसने यीशु से कहीं, गलतियां की।

"हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।"

पतरस के अंगीकार के बाद यीशु ने अपने चेलों को चेताया था कि वह दुख उठाएगा, मार डाला जाएगा और फिर जी उठेगा (मत्ती 16:21)। यीशु कमजोर को दलेर करता है और बलवान को सावधान करता है (मत्ती 14:27; यूहन्ना 16:33; 1 कुरिन्थियों 10:12; इब्रानियों 3:12-14)।

पतरस यह विश्वास नहीं कर पाया कि यीशु मरेगा, इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, हे प्रभु, परमेश्वर न करे तेरे साथ ऐसा कभी होगा। (मत्ती 16:22)। जो यीशु है, उसका तो पतरस ने अंगीकार किया था परन्तु जो यीशु ने कहा था उसका उसने इंकार किया। पतरस अकेला नहीं है। बहुत से लोग यीशु को प्रभु मानते हैं परन्तु उसकी बातों से इंकार करते हैं। यीशु ने कहा, जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो? (लूका 6:46; देखें मत्ती 7:21-22)।

उत्पत्ति 3:4 में शैतान ने हव्वा से कहा था, तुम निश्चय न मरोगे। शैतान आम तौर पर हमें परमेश्वर की इच्छा को नजरअंदाज करने के प्रलोभन में डालता है जिसमें हमारे और उन लाभों के बीच आने वाले बलिदानों को छोड़ना हो सकता है जिनकी हम इच्छा करते हैं (मत्ती 4:8-11)। यीशु ने पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो। तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इंकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा (मत्ती 16:23-25)।

यीशु हमारे पापों के बलिदान के रूप में अपना प्राण देने के लिए आया (मत्ती 20:28; यूहन्ना 1:21)। यीशु के जी उठने के बाद पतरस को इस बात की

समझ आई उसने लिखा, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ (1 पतरस 1:18, 19)।

हे प्रभु, यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं।

यीशु प्रार्थना करने के लिये पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ एक ऊंचे पहाड़ पर ले गया। चेले सो गए, परन्तु बाद में यीशु को महिमा पाए हुए देखने के लिए जाग उठे। कालांतर के दो बड़े लोग मूसा और एलिय्याह उसके साथ उसकी आने वाली मृत्यु की चर्चा कर रहे थे (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36)। पतरस न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिए कि वे बहुत डर गए थे (मरकुस 9:6)। परन्तु फिर भी उसने बोल दिया चाहे जानता न था कि क्या कह रहा है (लूका 9:33)। कितनी बार हम ऐसे गलत शब्द बोल देते हैं, जबकि उनके बोलने की आवश्यकता नहीं होती।

पतरस ने सुझाव दिया कि वे तीनों जनों का सम्मान करें, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है। यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये (मत्ती 17:4)। परन्तु परमेश्वर ने इस विचार को ठुकरा दिया। वह बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इसकी सुनो। चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यंत डर गए। यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा उठो डरो मत। तब उन्होंने अपनी आंखें उठाई और यीशु को छोड़ और किसी को न देखा (मत्ती 17:5-8)। बाद में पतरस ने 2 पतरस 1:16-18 में इसका ब्यौरा लिखा। पतरस की नीयत बेशक ठीक थी। परन्तु मनुष्य के धार्मिक विचार परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं हैं (मत्ती 15:9, 13)। हमें बिना कोई बदलाव किए उसकी आराधना और सेवा वैसे ही करनी आवश्यक है जैसा वह बाइबल में बताता है (यहूदा 3, 1 यूहन्ना 9)।

मूसा और एलिय्याह पुराने नियम के समय के दौरान परमेश्वर के नबी थे। परन्तु क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था को हटा दिया (कुलुस्सियों 2:14; गलातियों 3:24-25)। अब अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा मसीह की नई वाचा है (इब्रानियों 8:6-9; 9:15-17; यूहन्ना 12:48)।

केवल यीशु ही हमारा प्रभु है (इफिसियों 4:5)। हमारा मध्यस्थ केवल वही है, न कि मरियम या मर चुके अन्य संत (1 तीमुथियुस 2:5)। परमेश्वर तक जाने का हमारा मार्ग केवल वही है (यूहन्ना 14:6)। पिता परमेश्वर का आदर हम पुत्र मसीह के द्वारा करते हैं (यूहन्ना 5:22-23; 16-23-24)।

तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा।

अंतिम भोज के बाद यीशु अपने चेलों के पांव धोने लगा (यूहन्ना 13:1-17)। परन्तु पतरस ने उससे कहा तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा (यूहन्ना 13)8)। यीशु ने उसके साथ बहस की और अन्त में उसने उसे अपने पांव धोने दिए।

आमतौर पर घमण्ड हमें दूसरों की सेवा करने और उन्हें हमारी सहायता करने में रूकावट बनता है। यीशु ने दूसरों की सेवा करके अपने बड़े होने को खोया नहीं। वास्तव में उसकी सेवा के द्वारा हम उसकी महानता को देखते हैं। वह सेवा करवाने नहीं बल्कि सेवा करने आया था (मत्ती 20:28; फिलिपिप्यों 2:5-11)। बाद में पतरस ने लिखा, ''हे नवयुवकों, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन तुम सब के सब एक-दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बांधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है (1 पतरस 5:5)।

मैं तेरा इनकार नहीं करूंगा।

यीशु ने चेतावनी दी थी कि उसके चेले छोड़ जाएंगे। पतरस ने दलील दी कि मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा (मत्ती 26:33)। फिर यीशु ने पतरस को चेतावनी दी कि वह उसी रात तीन बार उसका इंकार करेगा। पतरस ने उत्तर दिया, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौ भी मैं तुझसे कभी न मुकरूंगा। (मत्ती 26:35)। परन्तु उसने उसका इंकार किया। उसने वैसे ही इंकार किया जैसे यीशु ने बताया था कि वह भविष्य में उसका इंकार करेगा (मत्ती 27:57-75)।

यीशु ने पतरस को छोड़ा नहीं परन्तु उसे पाप पर जय पाने में सहायता की (लूका 22:31-32; यूहन्ना 21:15-19)। यीशु के जी उठने के बाद पतरस ने उन लोगों के बीच जिन्होंने उसकी हत्या की थी, मसीह का प्रचार दृढ़ता के साथ किया, जेल गया और प्रभु से एक भी बार बिना मुंह मोड़े मृत्यु सह ली (प्रेरितों 2-4; पतरस 1:12-15)।

पतरस की गलतियों से हमारे मन में उसके लिए आदर कम नहीं होता इसके बजाय वे उसे हमारा और प्रिय बना देती है। वह हमारा प्रिय बनता जाता है क्योंकि पतरस की तरह ही हम भी गलतियां करते हैं और जिस प्रकार प्रभु की सहायता से पतरस ने अपनी गलतियों पर जय पाई, आप और मैं भी पा सकते हैं।

घर में विश्वास (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

आसानी से तलाक होने और घरों को टूटने के युग में हम बड़े निराश होकर इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ते हैं कि, मेरा विवाह कैसे टिक सकता है।, मेरा घर खुशहाल कैसे रह सकता है? परिवार के संबंध में हम कैसे मजबूत हो सकते हैं? इन सब प्रश्नों का उत्तर उन लोगों में पाया जाता है, जो घर में रहते हैं। यदि परिवार के लोग सचमुच में मसीही हैं, अर्थात आत्मा दे रहे हैं, तो टिकाऊ खुशहाल और मजबूत होगा। आत्मा का फल क्या है? पौलुस ने लिखा पर आत्मा का फल प्रेम आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं (गलातियों 5:22, 23)।

घर खुशहाल हो सकता है यदि हम सचमुच में घर पर आत्मा के फल के विभिन्न पहलुओं को लागू करते हुए सचमुच में मसीही हैं। हम आत्मा के फल की सातवीं खूबी यानी विश्वास या वफादारी पर आ गए हैं। वफादारी परमेश्वर के समर्थन का आधार है। परमेश्वर को भाने के लिए घर में विश्वास और वफादारी होनी आवश्यक है।

हम इस विचार से परिचित है कि विश्वास मसीही जीवन का आधार है। पतरस के यीशु में विश्वास के अंगीकार के बाद, यीशु ने उनसे कहा, मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा (मत्ती 16:18)। इसलिए मसीह में विश्वास कलीसिया की नींव का भाग है। मसीही बनने की पहली शर्त विश्वास है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 8:37; 16:31)। फिर विश्वास की नींव में अन्य सभी मसीही गुण मिला दिए जाते हैं (2 पतरस 1:5-7)। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि वफादारी घर की नींव को बनाती है।

परन्तु हम इससे बढ़कर भी कह सकते हैं। हम यह पुष्टि करने के लिए आगे जा सकते हैं कि वफादारी सचमुच के मसीही पर यानी उस घर की नींव है, जो परमेश्वर को भाता है। किसी परिवार ने बिना परमेश्वर के अस्तित्व को माने या बिना मसीह की उपस्थिति को माने घर में एक सुखद माहौल बनाया हो सकता है। परन्तु वफादारी के किसी घर के लिए ऐसा परिवार होना असंभव है, जो परमेश्वर को भाता हो और जिसका वह पक्ष लेता हो (देखें इब्रानियों 11:6)।

यह विशेषता क्या है, तथा अन्य संस्करणों में वफादारी बताया गया है। यीशु मसीह के विषय में पूर्ण भरोसा, पूर्ण आत्मसमपर्ण, पूर्ण विश्वास, पूर्ण आज्ञाकारिता के विचार का सुझाव देता है।

इसके अलावा यह शब्द और संबंधित विशेषण दूसरों के साथ संबंधों से संबंधित है। उस संबंध में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच संबंध पर लागू करने पर वफादारी के तुल्य बन जाता है। विलियम बार्कले ने कहा है:-

विश्वसनीयता, भरोसा योग्यता का ही गुण है जो किसी को एक ऐसा व्यक्ति बनाता है जिस पर हम पूरी तरह से निर्भर हो सकते है और जिसकी बात पूरी तरह से स्वीकार्य हो सकती है। आमतौर पर हमें यह लगेगा कि इस सब का बेहतरीन अनुवाद वफादारी ही है।

तो फिर, वफादारी शायद इस वचन में इस्तेमाल किए शब्द को परिभाषित करने का सबसे अच्छा ढंग है।

यदि घर परमेश्वर को भाता होना चाहता है तो उसमें इन तीन बातों में वफादारी के गुण को सिखाया जाना और अपनाया जाना आवश्यक है।

जिम्मेदारियों को पूरा करने में वफादारी

पहले तो घर के लिए जिम्मेदारियों को पूरा करने में वफादारी पर जोर देना आवश्यक है। वचन दिखाता है कि भण्डारियों को भरोसेयोग्य होना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 4:2, वफादार)। भण्डारी को जिसे अपने स्वामी के घर का जिम्मा सौंपा गया है विश्वासयोग्य कहा गया है (मत्ती 24:45, लूका 12:42) और बेहतर काम करने वाले सेवक को अच्छा और विश्वासयोग्य बताया जाएगा (मत्ती 25:21, 23, देखें लूका 19:17)। इसके अतिरिक्त सुसमाचार की सेवकाई को पूरा करने वालों को विश्वासयोग्य या वफादारी कहा जाता है।

बहुतों को अच्छे कर्मचारी बनने के लिये आवश्यक विश्वासयोग्यता कहां से मिल सकती है। वे उदाहरण से कायदे से और अनुभव से सीखते हैं। उन्हें छोटी उम्र से ही जिम्मेदारियां दिया जाना आवश्यक है और उन जिम्मेदारियों को ईमानदारी से पूरा करने की मांग करनी चाहिए।

अपने साथी के प्रति वफादारी

दूसरा, घर को व्यक्ति के जीवन साथी के प्रति वफादारी है। विवाह का आधार एक-दूसरे के साथ सफादारी है। जब कोई पुरुष या स्त्री अपने आपको केवल दूसरे के लिए रखने को वचन देता या देती है, तो वफादारी का वह वचन मरने तक होना चाहिए। यह वचन जीवन साथी के अलावा किसी भी दूसरे के साथ शारीरिक संबंध रखने से दूर रहने का है। जब पति इस शपथ को तोड़ देते हैं तो हम इसे बेवफाई कहते हैं जो वफादारी का विपरीत शब्द है।

निकाह के दौरान दूल्हे और दुल्हन द्वारा दिए गए वफादारी के वचन आमतौर पर आज टूट जाते

हैं। इक्कीसवीं सदी में कई लोगों के लिए यह भी हैरानी की बात हो सकती है कि कोई अपने विवाह के साथी के प्रति वफ़ादार रहता है। वास्तव में संसार लोगों को कई प्रकार से अनैतिक होने का लालच देता है।

लोग अपने साथी के प्रति बेईमान क्यों होते हैं?

मौन स्वीकृति हम ऐसे लोगों के बीच में रहते हैं जो व्यभिचार और कुकर्म करते हैं, जिनके चक्कर में अपनी पत्नियों और या अपने पतियों को धोखा देते हैं। सही करने की हमारी इच्छा के बावजूद हम पर दूसरों के जैसे बनने के दबाव में प्रलोभन में पड़ सकते हैं। या यूं कहें कि कहीं न कहीं अचेत मन में हम अपने आस-पड़ोस के द्वारा यह सोचने के लिए प्रभावित होते हैं कि व्यभिचार वास्तव में इतना बुरा नहीं है।

आसाान तलाक, आज कई समाजों में तलाक को शर्म की बात नहीं माना जाता। तलाक यदि केवल तलाक तक रहता है तो इसे इतनी बड़ी बुराई नहीं माना जाता।

मीडिया का प्रभाव। मनोरंजन उद्योग लगातार ऐसे लोगों को दिखाता रहता है जो बिना किसी बुरे परिणाम को सहे इसमें लगे हैं। ऐसे संबंध वे तलाक का कारण बनें या नये विवाह का कारण हों या न उन्हें आमतौर पर ऐसे सुन्दर, मधुर संबंधों के रूप में दिखाया जाता है, जो विवाह के संबंध से बढ़कर संतुष्टि और आनन्द देते हैं।

भड़काऊ लिबास और व्यवहार। हमारे आस-पास लोग ऐसे लिबास पहनते और काम करते हैं, जो दूसरों को बेवफाई के लिए आकर्षित करते हैं। आधुनिक फ़ैशन शालीनता को बढ़ावा नहीं देता। कई फ़ैशन तो कामुकता से भरे हैं। लोग आमतौर पर उसे पसंद करते हैं जिससे विपरीत लिंग के लोगों को लुभाया जा सके। इस संसार में रहने वाला व्यक्ति पाप के प्रलोभनों का सामना करता है।

लोग अपने साथियों के प्रति वफादार क्यों नहीं होते?

संसार हमें अविश्वास के लिए लुभा रहा है तो हमें अपने साथियों के प्रति वफादार क्यों होना चाहिए?

क्योंकि परमेश्वर इसकी मांग करता है। मसीही लोगों को विवाह में वफादार होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है। इब्रानियों 13:4 कहता है, विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। जो लोग परमेश्वर को प्रसन्न करने के इच्छुक हैं उनके लिए यही कारण काफी होना चाहिए।

वैवाहिक संबंध की इच्छा के कारण मसीही पत्नियों और पतियों के रूप में हमें एक-दूसरे के प्रति वफादार होना आवश्यक है, क्योंकि विवाह में शारीरिक संबंध पवित्र है क्योंकि यही वह कार्य है जिसमें विवाहित दम्पत्ति सच्चे अर्थ में एक होते हैं (मत्ती 19:5)। यह एक होने का प्रतीक भी है और कारण भी विवाह में शारीरिक संबंध की पवित्रता के कारण ही यीशु ने व्यभिचार को तलाक का एकमात्र वैध कारण बताया था (मत्ती 19:9)।

क्योंकि हम ने वचन दिया। हमें अपने साथियों के प्रति वफादार रहना आवश्यक है, क्योंकि हम ने कहा है कि हम वफादार रहेंगे। यदि हम ईमानदार और भरोसे के योग्य हैं तो हम अपना वायदा नहीं तोड़ेंगे।

परिणाम के कारण। आत्मिकता के अलावा हमें इस जीवन में बेवफाई के परिणामों के कारण अपने साथियों के प्रति वफादार होना आवश्यक है। वे परिणाम क्या हैं?

1. बेवफाई के परिणाम, विवाह के संबंध में यदि एक जन व्यभिचार करता है तो क्या होगा? दो संभावनाएं है।

ऐसी संभावना है कि किसी को पता चले। बेशक आमतौर पर व्यभिचार का पता चल ही जाता है परन्तु यदि इसका पता नहीं चलता तो भी विवेक की समस्या है कि व्यभिचार करने वाला या वाली जीवन भर इस दोष की पीड़ा को महसूस करता रहता है या रहती है। किसी दूसरे मानवीय जीवन को इस्तेमाल करने की भी समस्या है, व्यभिचार होने पर न केवल निर्दोष साथी के विरूद्ध ही पाप किया जाता है बल्कि अवैध शारीरिक संबंध उसमें शामिल दूसरे व्यक्ति के विरूद्ध भी पाप है।

दूसरी संभावना है कि बेवफाई का पता चल जाए तो क्या होगा? फिर दो संभावनाएं हैं। ऐसा दाग या तनाव लग जाता है जो शायद कभी मिटे न।

एक और संभावना है कि तलाक हो सकता है। फिर परिवार के एक सदस्य के बेवफाई के एक पल से पूरा परिवार सदा के लिए प्रभावित हो जाता है। यीशु की अनुमति पर उसने इसको बढ़ावा नहीं दिया।

2. तलाक के परिणाम। इस खुले युग में भी व्यभिचार को आधिकारिक रूप में कई समाजों में बुरा माना जाता है और अनुसंधान के अनुसार यह विवाह के टूटने का एक बड़ा कारण है। इसलिए यदि विवाह में कोई साथी व्यभिचार करता हैं तो इसका परिणाम तलाक हो सकता है। बेवफाई के कारण होने वाले तलाक से तलाक लेने वाले दोनों पक्षों के लिए घातक परिणाम हैं- यानी दोषी पक्ष (बेवफा) जिसने व्यभिचार किया है और निर्दोष (वफादार साथी) के साथ-साथ दूसरे लोग भी प्रभावित होते हैं।

दोषी पक्ष का क्या होगा? इस प्रश्न पर यीशु का कहना स्पष्ट था पर उसकी शिक्षा कठिन है (देखें मत्ती 19:9)। इसके अलावा छोड़कर जाने वाले सभी साथी को बच्चे की सहायता या गुजारा-भत्ता देना पड़ सकता है। यह अतिरिक्त बातें कई सालों तक एक बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं, या हो सकता है कि जीवन भर के लिए हों। इसके अलावा माता या पिता विशेष अवसरों को छोड़ प्रिय बच्चों को देखने से वंचित होना पड़ सकता है।

यदि बेवफा पति या पत्नी पुनर्विवाह विवाह कर लें तो? पुरुष उस स्त्री से जिसके साथ उसके संबंध हों, विवाह करना चुन सकता है, पर क्या ऐसा विवाह जो वासना पर आधारित है सफल हो पाएगा? वह स्त्री विवाहित पुरुष के साथ संबंध बनाना मान गई तो वह ऐसी स्त्री पर भरोसा कैसे कर सकता है? वह कैसे यकीन कर सकता है कि वह किसी दूसरे के साथ संबंध नहीं रखेगी? इसी प्रकार स्त्री कैसे भरोसा रख सकती हैं? वह अपनी पहली पत्नी के साथ बेईमान था; तो दूसरी पत्नी के साथ ईमानदार कैसे होगा? वह उससे विवाह करे या न या किसी दूसरे से विवाह कर ले, उसे यह समझना आवश्यक है कि आंकड़े बताते हैं कि दूसरा विवाह (तलाक के बाद) पहले विवाह से कम सफल रहता है।

निर्दोष पक्ष क्या करें? जिस व्यक्ति ने व्यभिचार नहीं किया वह अपने आप को दोषी महसूस नहीं करता। वास्तव में कई बार निर्दोष पक्ष को दोषी महसूस करना चाहिए। उदाहरण के लिए कई मामलों में पत्नी वास्तव में इतनी भोली नहीं होती, वह अपने पति को किसी दूसरी स्त्री की बाहों में धकेलती है। परन्तु यदि वह (पुरुष या स्त्री) बिल्कुल निर्दोष हों तो भी यह संभावना है कि पीड़ित पति या पत्नी चकित होंगे कि मैंने क्या किया, या मुझ से क्या गलती हो गई, जिससे मेरा पति या पत्नी व्यभिचार में चला गया। वास्तव में जब भी कोई विवाह टूटता है तो उसमें शामिल पुरुष या स्त्री की नाकामी का अहसास होता है जैसे वे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सफल न हुए हों।

एक साथी के भोला या निर्दोष होने के बावजूद तलाक से जीवन बेहतर होना आवश्यक नहीं। अर्थात कठिनाइयां है, बच्चों के पालन-पोषण की विशेष चुनौतियां हैं, यदि बच्चे हैं, अविवाहित होने में तालमेल बिठाने में कठिनाइयां किसी और साथी को ढूंढ़ने की दुविधा। एक तलाकशुदा

व्यक्ति दूसरे बार अच्छे साथी के मिलने के प्रति सुनिश्चित कैसे हो सकता है? तलाक का एक बुरा पहलू यह है कि तलाक से होने वाली समस्याएं आमतौर पर निर्दोष पक्ष लिए अधिक होती है, तौभी हो सकता है कि वे सभी समस्याएं दोषी पक्ष के कारण आई हों।

निर्दोष दर्शकों का क्या? स्वाभाविक है कि तलाकशुदा दम्पत्ति के बच्चे प्रभावित होते हैं। इसके अलावा तलाक पति और पत्नी दोनों के माता-पिता को प्रभावित करता है। दादा-दादी या नाना-नानी भी हो सकते हैं। कलीसिया और समाज प्रभावित हो सकते हैं हम सब को परेशानी होती हैं?

इस अध्ययन का उद्देश्य किसी भी सूरत में तलाक को गलत ठहराना नहीं है न ही यह निर्दोष पक्ष के तलाक लेने और पुनर्विवाह करने के अधिकार पर सवाल उठाने के लिए हैं, बल्कि यह तो नास्तिकता के बुरे परिणामों को दिखाने के लिए है। विवाह की समस्याएं विवाह के साथी की बेवफाई के कारण होती है। आश्चर्य की बात नहीं कि परमेश्वर ने कहा, व्यभिचार न करना (निर्गमन 20:14; देखें रोमियों 13:9)। यह हमारी ही भलाई के लिए था।

परमेश्वर के साथ वफादारी

तीसरा, घर को परमेश्वर के साथ वफादारी पर जोर देना आवश्यक है। थॉमस बी. वारेन ने कहा है, विवाह उन लोगों के लिए है जो परमेश्वर से और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। घर को परमेश्वर के लिए प्रेम और उसके लिए वफादारी पर जोर देना आवश्यक है। परमेश्वर के लिए वफादारी पर जोर देना विशेष रूप में अपने बच्चों को उनकी जिम्मेदारी के संबंध में माता-पिता के लिए विशेष रूप में आवश्यक है। मसीही माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों में अपने विश्वास को डालें। कैसे?

सिखाने के द्वारा

मसीही माता-पिता के रूप में अपने बच्चों को सिखाने के समय हमें अपने विश्वास को देना आवश्यक है। हमें उन्हें हर हाल में हर समय सिखाना चाहिए। हमें वैसे ही करना चाहिए जो व्यवस्थाविवरण 6:6,7 में परमेश्वर में इस्राएली माता-पिता से चाहा था:-

ये आज्ञाएं जो आज तुम को सुनाता हूं, वे तेरे मन में बनी रहीं; और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझा कर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।

सिखाना ठहराए हुए समयों और स्थान पर हो सकता है, पर यह मार्ग पर चलते भी हो सकता है और होना चाहिए। प्रभावी शिक्षा बिना योजना के कभी भी किसी भी समय दी जा सकती है। सिखाने के अवसर हर प्रकार की गतिविधि में किसी भी परस्थिति में हो सकते हैं।

नमूने के द्वारा

मसीही माता-पिता वफदारी को केवल सिखाकर नहीं बल्कि विशेष रूप में उदाहरण के द्वारा डालते हैं। बच्चे उन प्राथमिकताओं से जिन्हें वे दिन-प्रतिदिन और सप्ताह दर सप्ताह देखते है, अधिक सीखते है। उदाहरण के लिए माता-पिता की नजर में विश्वास कितना आवश्यक हैं? छोटे बच्चे भी इस प्रश्न का यह उत्तर देकर बता सकते हैं कि उनके माता-पिता कितनी बार प्रार्थना करते हैं या बाइबल को पढ़ते हैं या वे परिवार के लिए आराधना में समय निकालते हैं या नहीं, माता-पिता उन्हें बड़े होते समय क्याऔर कैसे प्रोत्साहित करने के ढंग से और अपने जीवनों में कलीसिया को दी जाने वाली प्राथमिकता से। मसीही लोग कलीसिया में मसीह के बिना परमेश्वर के विश्वासी नहीं हो सकते। यदि हम परिवार में परमेश्वर के प्रति वफादारी को दिखाना चाहते हैं तो हमें चंदा देने में वफादार होने से आरंभ करना आवश्यक है।